अन्तर्वस्तु अनुक्रम

	सम्पादकीय (द्वितीय संस्करण)	स्वामी योग चिन्मय	I-II
	सम्पादकीय (प्रथम संस्करण)	डॉ० दयानन्द भार्गव	III-VIII
१.	प्रवचन :		१–२७
	रचना का स्रोत और उसकी प्रामाणिकता ।		
२.	प्रश्नोत्तर-प्रवचन :		२९–७३
	अन्तर्जीवन का विश्लेषण, इतिहास और पुराण में अन्तर, सत्य की खोज में शास्त्रीय माध्यम पर चर्चा, महावीर, बुद्ध, लाओत्से, कायक्लेश उपवास ।		
३.	प्रवचन :		७५–९६
	जन्म, विवाह, वीतरागता, नग्नता ।		
४.	प्रश्नोत्तर-प्रवचन :		९७–१४२
	अशरीरी आत्माओं से सम्पर्क, राग, विराग और वीतराग का अर्थ, जातिस्मरण, घृणा और प्रेम, द्वन्द्व के प्रति जागरूकता, बुद्ध और दलाई लामा, मैथुन और अनुभूति, वीतरागता और समाज, व्यवहारदृष्टि और निश्चयदृष्टि ।		
५.	प्रवचन :		१४३–१६७
	परिग्रह और अपरिग्रह (बोध और त्याग), सत्य की अभिव्यक्ति के उपकरण खोजने की साधना ।		
६.	प्रश्नोत्तर-प्रवचन :		१६९–२०४
	साहस, विवेक, जागरण, करुणा का रूप, जगत् की सत्यता और असत्यता का विचार, अनुभूति और अभिव्यक्ति की दिशाओं में भेद ।		
७.	प्रवचन :		२०५–२२८
	अभिव्यक्ति के उपायों की खोज ।		
८.	प्रश्नोत्तर-प्रवचन :		२२९–२७३
	अनेकान्तवाद (सापेक्षतावाद), साम्प्रदायिकता का विरोध,		

महाव्रत और अणुव्रत, दर्शन, ज्ञान, चरित्र, विविध योनियां और मोक्ष, महावीर से सम्पर्क स्थापित करने की सम्भावना।

९. प्रवचन : २७५-२९८

महावीर से सम्पर्क स्थापित करने का मार्ग, श्रावक शब्द का अर्थ, श्रावक बनने की कला, प्रतिक्रमण, सामायिक।

१०. प्रवचन : २९९-३२३

सामायिक की व्याख्या।

११. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ३२५-३५९

नैतिकता और नैतिक साहस, पाखण्डी ब्रह्मचर्य और सही ब्रह्मचर्य, कामोपभोग का सम्यक् प्रकार, दैनिक प्रक्रिया में सतत जागरण, व्रतमीमांसा, भूत-प्रेतों के सम्बन्ध में।

१२. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ३६१-४०३

सामायिक और वीतरागता में अन्तर, कार्यकारण सिद्धान्त का सविस्तार विश्लेषण, कर्मों की सूखी रेखा का सिद्धान्त, कर्मवाद की न्याय-संगति, कर्मवाद और समाजवाद, कर्मों की सूखी रेखा की व्याख्या।

१३. प्रवचन : ४०५-४३४

संकल्प और उसका उपयोग, विकास सिद्धान्त, विकास-प्रक्रिया में डारविन के मत की आलोचना, कर्मवाद और पुनर्जन्म, तीर्थङ्करों की माताओं के स्वप्न, जागृत दशा में मृत्यु, तिब्बत में 'बारदो' का प्रयोग, सूक्ष्म शरीर।

१४. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ४३५-४५५

महावीर को गुरु की खोज अनावश्यक, भिक्षा की शर्तें, गृहत्याग पलायन नहीं है।

१५. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ४५७-४९७

महावीर अहंवादी नहीं हैं, प्रेम में शर्त नहीं है, महावीर का जन्म जगत् की जरूरत थी, अध्यात्म विज्ञान की खोज में तिब्बत का योग, महावीर और अहिंसा, सीमित क्षेत्र में ही

तीर्थङ्करों का जन्म लेना, तीर्थङ्करों की शृङ्खला में चौबीस व्यक्तियों का होना, उसके कारण, शृङ्खला बन्द करने में अनुयायियों का हाथ, पश्चिम में फकीरों की शृङ्खला, मुहम्मद के बाद मुसलमान फकीर, रहस्यवादी सूफियों के सम्बन्ध में, साधना पद्धतियों के विभिन्न प्रयोगों में लक्ष्य की एकता, पशुहिंसा के विषय में समझौता अमान्य, वनस्पति जीवन और पशु जीवन में अन्तर, शाकाहारी और अशाकाहारी व्यक्तियों की करुणा में अन्तर।

१६. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ४९९–५२३

जगत् अनादि और अनन्त, जड़ और चेतन एक ही वस्तु के दो रूप, सृष्टि के आदि को जानना असम्भव, जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में महावीर की मानसिक स्थिति का विश्लेषण, महावीर की अहिंसा में स्थिरता।

१७. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ५२५–५६०

महावीर की अहिंसा को समझने में कठिनाई, महावीर के सिद्धान्तों का प्रयोगात्मक रूप, महावीर की साधुता और दूसरों को साधु बनने का उपदेश, महावीर के संघ में साध्वी संघ, महावीर के जीवन का विश्लेषण और समाज, समाज की स्थिति और नए समाज का निर्माण, राग-विराग, द्वेष-घृणा आदि द्वन्द्वों से मुक्त, ध्यान की भूमिका, निगोद की व्याख्या, निगोद से मोक्ष तक।

१८. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ५६१–५८३

मुक्त आत्मा का पुनरागमन, आवागमन से छूटने के उपाय।

१९. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ५८५–६००

अकेले की खोज अकेले के प्रति, कहानियां ऐतिहासिक नहीं, सत्य की खोज में विधि की असमर्थता, अनेकान्तवाद।

२०. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ६०१–६१३

एकांतवाद उपयोगी नहीं, सुरक्षा-असुरक्षा की मीमांसा, साधुओं में अहंकार।

२१. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ६५५–६६१

जीवन्त सम्पर्क के लिए लोकभाषा प्राकृत का प्रयोग, ज्ञान के अधिकारी-अनधिकारी का प्रश्न, पण्डितों की नाराजगी, गोशालक और महावीर, कुक्कुटासन और गोदोहासन, महावीर का आत्मदर्शन, महावीर का गृहत्याग।

२२. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ६६३–६८६

त्याग और भोग, सैक्स परवर्ट्स और धार्मिक परवर्ट्स, नासाग्र ध्यान, शंकर और चार्वाक।

२३. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ६८७–७०२

चेतना और मूर्छा, महावीर और पारसनाथ की परम्पराएँ, प्रेम अनादि है, प्रेम की अनुभूति नवीन है, धर्म और सम्प्रदाय, एक धर्म की स्थापना असम्भव, धर्म की नहीं, धार्मिकता की स्थापना सम्भव है।

२४. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ७०३–७२४

सुख की खोज, स्वतन्त्रता, उपलब्ध आत्माओं को उतरने की स्वतन्त्रता।

२५. प्रश्नोत्तर-प्रवचन : ७२५–७४२

दुख, दुःख और आनन्द की व्याख्या।

२६. समापन-प्रवचन : ७४३–७६१

महावीर को समझने का एकमात्र उपाय—प्रेम, उपसंहार।

परिशिष्ट–१ : ७६३–७८९

(१) अहिंसा।

परिशिष्ट–२ : ७९१–७९६

(२) ध्यान।

*रहस्यदर्शी ऋषि रजनीश : एक झलक। ७९७–७९८

*भगवान् श्री रजनीश साहित्य सूची ७९९–८०३